ज्योतिष और मेधा पाटकर

07 December, 2007.

संर्घषमय जीवन

नाम : - मेधा पाटकर
जन्म तारिख :- ०१ दिसबंर, १९५४
जन्म समय :- १० : २० सुबह
जन्म स्थान :- मुंबई

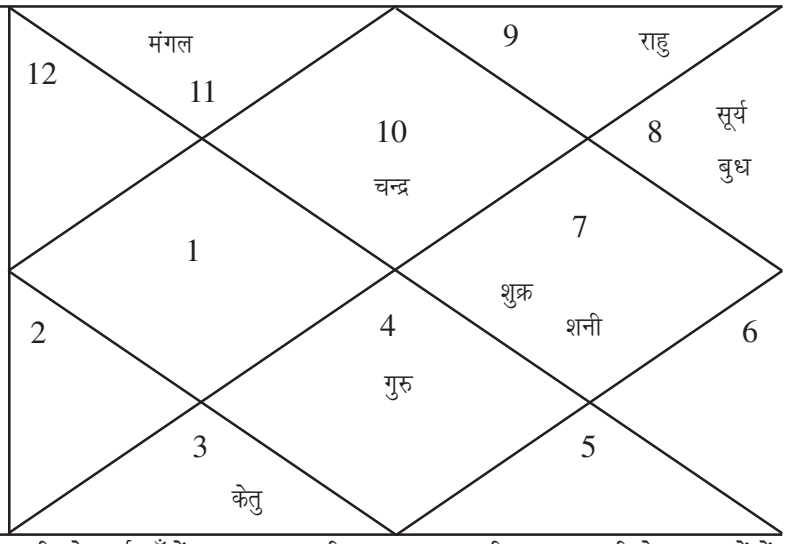

बुध्दीमतापुर्ण चौड़ामाथा, किसी को भी परख लेने वाली खोजपुर्ण आँखें, आत्मसम्मान की कारक सुतवा बड़ी नाक, कनपट्टी के पास बालों में निरंतर बढ़ती चाँदी की रंगत जो अनुभव को बढ़ता हुआ दर्शाती हैं । ये विश्लेषण विश्व प्रसिध्द गरिमामय महिला मेधा पाटकर के व्यक्तित्व का हैं जो कि आज 'नर्मदा आदोंलन' का प्रतिक चिन्ह बन गई हैं । एसा कहें कि मेधा पाटकर नर्मदा आदोंलन की एसी उफनती धारा हैं जिसने समूचे विश्व को अपनी विचारधारा से भिगोकर रख दिया हैं । कई लोग मेधा को 'मेगा वॉट' के नाम से भी पुकारते हैं । आखिरकार 'मानवाधिकार रक्षक' का अर्वाड पाने वाली मेधा पाटकर मानवाधिकार के हनन करने वालों के लिये बिजली का झटका ही तो हैं ।

मेधा पाटकर का जन्म मुबंई में १ दिसंबर, १९५४ को हुआ था । बहुत ही मेधावी मेधा पढ़ाई करते करते 'टाटा इन्स्टियुट ऑफ सोशल साईन्स' से एम ए पास कर पी एच डी कर रही थी जब १९८५-८६ मे नर्मदा बचाओं आदोलन आरंभ हुआ और मेधा पाटकर ने सबकुछ आधा अधूरा छोड़कर आदोंलन को ही अपना लक्ष्य बना लिया । इसके लिये कई त्याग उन्हे करने पड़े हैं यंहा तक कि उनका विवाह भी विच्छेद हो गया । बहरहाल बड़े लक्ष्य छोटी खुशियों की बली ले ही लेते हैं और महान लोग अपने कर्म से ही महान बनते हैं तथा कई खुशियों का सहज ही त्याग कर देते हैं ।

ज्योतिष शास्त्र अनुसार मेधा की कुण्डली मकर लग्न की हैं जोकि दर्शाता हैं कि मकर लग्न के लोग बड़े ही महात्वाँकांक्षी होते हैं और वैवाहिक जीवन में स्वाभिमान को बीच में पाते हैं जिससे वैवाहिक जीवन में कड़वाहट प्रकट हो जाती हैं । हालाकि कुण्डली में चन्द्र और गुरु का गजकेसरी योग हैं, बुध आदित्य योग हैं, शुक्र का मालव्य योग हैं, गुरु का हंस योग और शनी का शश योग हैं । इसमें से तीन तो पंच महापुरुष योगों में गिने जाते हैं जो मेधा को महान बनाने के लिये अपना फल देते हैं । गजकेसरी योग के लिये कहा हैं, "केन्द्रस्थिते देवगुरौ मृगाङ्काद्, योगस्तदाहुर्गजकेसरीति । दृष्टे सितार्येन्दुसुतै शशांके, नीचास्तेहीनै गजकेसरी स्यात" । मालव्य योग के लिये कहा हैं, "स्त्रीचेष्टों ललीतागंसन्धीनयनः सौन्दर्यशालीगुणी, तेजस्वी सुतधारवाहनधनीशास्त्रार्थवित्पण्डित : । उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिचतुर : परस्त्रीरतः, सप्ततिअब्दमुपैति सप्तसहित मालव्ययोगो ध्रुवः" । शश योग के लिये कहा हैं, "नानासेना निचयनिरतो दन्तुरश्चापी किंचि, ध्दातोर्वादे भवति कुशलश्चञ्चलो लोलः । स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजघों, मध्ये क्षामः सुललितमति रन्ध्रवेदी परेषाम" । इस तरह शुभ योगों से भरी मेधा की कुण्डली दर्शाती हैं कि उसका जन्म महान कार्यो के लिये हुआ हैं और महान कार्य त्याग और परमार्थ के बिगैर कैसे हो सकते हैं ।

अगर हम महान राजनेताओं और राजनितिज्ञों की कुण्डली देखें तो उसमें भी हमे एसे ही योग देखने को मिलते हैं जैसे मेधा की कुण्डली में हम देख रहे हैं । महान राजनितिज्ञों और नेताओं की कुण्डली में अक्सर चन्द्र लग्न के आसपास होता हैं और मेधा की कुण्डली में भी चन्द्र लग्न में विराजमान दिखाई देता हैं । इससे मन में उठे विचार कर्म में परिलक्षित होने लगते हैं । मन का कारक चन्द्र शायद इसलिये सभी महान लोगों की कुण्डलियों में केन्द्र में अथवा लग्न के आसपास दिखाई देता हैं । इसके अलावा महान लोगों की कुण्डलियों में अधिकतर ग्रह पुरुष राशियों में होते हैं जिससे उनमें पुरुषार्थ की अधिकता होती हैं । मेधा की कुण्डली में भी पाँच ग्रह पुरुष राशियों में हैं और मेधा में पुरुषार्थ की भरमार तो जगजाहिर हैं । अधिकतर महान लोगों का सूर्य, बुध के साथ ही देखा गया हैं और मेधा की कुण्डली में भी सूर्य, बुध साथ साथ देखें जा सकते हैं इससे 'बुध आदित्य योग' बनता हैं जो बुध्दी से सफलता को हासिल करने का फल देता हैं । मेधा की कुण्डली के एसे और भी कई उदाहरण दिये जा सकते हैं जो मेधा को महान नेताओं, राजनितिज्ञों और मंत्रीयो की पंक्ति में खड़ा कर सकते हैं । महान लोगों से मिलती जुलती मेधा की कुण्डली मेधा को महान लोगों में शामिल करती हैं और कोई बड़ी बात नही होगी कि किसी दिन मेधा एक बड़ी राजनितिक पदाधिकारी बन जाये ।

बहरहाल मेधा की मूल लड़ाई नमर्दा नदी पर बन रहे बाँध की उँचाई ज्यादा ना बढ़ाने को लेकर थी । उसकी विचारधारा अनुसार बाँध की उँचाई बढ़ाने से जल भंडारण अधिक होगा और इससे किसानों कोई लाभ नही होगा जबकि उद्योगपति इसका लाभ अधिक लेगें तथा पर्यावरण को जो हानि होगी सो अलग से होगी । पर्यावरण से प्रेम मेधा पाटकर की कुण्डली में दशम में स्थित शुक्र और शनी की उपस्थिति से प्रकट हो जाता हैं । १९८५, ८६ से जब नर्मदा बचाओं आदोंलन आरंभ हुआ तो किसी को ये पता न था कि ये आदोलन कब तक चलेगा और मेधा पाटकर ने जब इसका बीड़ा उठाया था तो उसे भी पता नही था कि आंदोलन का एक अंतहीन सिलसिला चल पड़ा हैं । बहरहाल दशम में शनी व्यक्ति को जंहा पर्यावरण प्रेमी बनाता हैं वंही दुर्लभ जीवन जीने का जीवट भी प्रदान करता हैं और वो अपने लक्ष्य को कभी आँखों से ओझल नही होने देता हैं । मेधा पाटकर एसे जीवट व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं कि उसे अपने लक्ष्य से हटाने के लिये उसके विरोधियों ने उसपर हमले तक करवायें परन्तु मेधा अपने लक्ष्य से नही हटी । इसी आंदोलन के चलते २२ सिंतबर, १९९९ को मेधा

ज्योतिष और मेधा पाटकर

07 December, 2007.

और उसके २७५ कार्यकर्ताओं को पुलिस ने नंदुरबार के करीब दमखेड़ी में गिरफ्तार कर लिया । २ दिंसबर, २००६ को सिंगुर में फिर मेधा का 'लॉ एण्ड ऑर्डर' के नाम पर पुलिस से वास्ता पड़ा । मेधा की कुण्डली में लग्न के आगे-पीछे मंगल और राहु जैसे पाप ग्रह अशुभ 'पाश योग' का निर्माण करते हैं और मेधा को पुलिस से उलझाते हैं । यही हाल चन्द्रमाँ का भी होता हैं जिससे किये गये प्रयास देर से फल दिखाते हैं ।

अप्रेल, १९८३ से आरंभ हुई गुरु महदशा ने मेधा को एक महान लक्ष्य की ओर अग्रसर कर दियाा फलस्वरुप मेधा ने नर्मदा बचाओं आंदोलन का बीड़ा उठाया । गुरु से गजकेसरी योग बनता हैं और इसी की वजह से जब तक अप्रेल १९९९ तक इसकी दशा चली मेधा यश और मान सम्मान को पाती रही परन्तु जीवट प्रदान करने वाले शनी की महादशा जैसे ही आरंभ हुई मेधा के लिये आंदोलन परेशानियों से भर गया और निरंतर रुकावटें उभरने लगी । सबसे पहले शनी ने उसे १९९९ में गिरफ्तार करवाया, २८ मार्च, २००६ को मेधा भूख हड़ताल पर बैठी, १७ अप्रेल २००६ को सुप्रीम कोर्ट ने बाँध की उँचाई ना बढ़ाने की अपील नांमजूर कर दी । ०८ नवबंर २००७ को नंदीग्राम की ओर बढ़ते हुऐ मेधा के काफिले पर मीदनापुर में उसके विरोधियों ने हमला कर दिया । शनी की ये दशा मेधा को कभी अपने लक्ष्य से नही हटने देगी और आने वाले समय में आंदोलन के लिये नित नये समर्थक उत्पन्न होते रहेगें । दशम में शनी व्यक्ति को जिस लक्ष्य के लिये दृढ़प्रतिज्ञ बनाता हैं उसी लक्ष्य के लिये वो उसके उतराधिकारी अथवा समर्थक भी प्रदान करता हैं । बहरहाल शनी की महादशा में परेशानियों की अधिकता केवल एक ही कारण से हैं कि शनी नवांश कुण्डली में नीच राशि का हो जाता हैं और संम्पुर्ण शुभ फल प्रदान नही कर पाता हैं । इसके लिये मेधा शनी रत्न नीलम धारण करें तो शनी की कई समस्याओं का निदान निकल सकता हैं ।

मेधा को कई अर्वाड प्रदान किये गये हैं जो मेधा की विशेषताओं को दर्शाते हैं । जैसे १, राईट लवली हुड अवार्ड । २, एम ए थॉमस नैशनल ह्युमेन अवार्ड। ३, दीनानाथ मगेंश्कर अवार्ड । ४, महात्मा फुले अवार्ड । ५, गोल्डमैन एनवायरमेन्ट प्राईज । ६, ग्रीन रिबन अवार्ड । ७, ह्युमेन राईटस डिफेन्डरर्स अवार्ड । आने वाली बुध की महादशा इन अवार्डस में और बढ़ोतरी करने वाली हैं । इसी बुध महादशा में 'बुध आदित्य योग' भी फलित होगा और मेधा किसी महान पद पर विराजमान होगी । हमारी शुभ कामनाऐं मेधा के साथ हैं । आशा हैं, पर्यावरण की प्रेमी मेधा पर्यावरण, किसानों और जनसाधारण के लिये उन्नति तथा जागरण की प्रेरणा सिध्द होती रहेगी ।